Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JAN-FEB, 2022, VOL- 9/69

भारतीय उच्च शिक्षा में बालिकाओं की स्थिति व चुनौतियाँ

दीपक कुमार

(शोधार्थी), महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिंदीविश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र- 442001

Paper Received On: 21 FEB 2022
Peer Reviewed On: 28 FEB 2022
Published On: 1 MAR 2022

Abstract

शिक्षा जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा है,चाहे वह बालक का जीवन हो या बालिका का जीवन हो, दोनों के लिए शिक्षा बहुत जरुरी होती है। यदि देखा जाए तो भारत को सामाजिक एवं आर्थिक रूप से मजबूत बनाने के लिए लड़कियों की शिक्षा की अत्यंत आवश्यकता है, क्योंकि शिक्षित महिलायें व्यावसायिक क्षेत्र जैसे- प्रोद्योगिकि, चिकित्सा, वकील, प्रशासनिक सेवा आदि में योगदान देने के साथ-साथ अपने घर को भी अच्छी तरह संभालती हैं। प्राचीन समय में लड़कियों की शिक्षा काफी अच्छी थी, लेकिन मध्य युग में महिलाओं की शिक्षा अनेक बाधाओं व सीमाओं की वजह से इतनी अच्छी नहीं थी। भारत की स्वतन्त्रता के बाद अनेक आयोग तथा समितियां बनी जिसने स्त्री शिक्षा के विकास के लिय कार्य किया। इन सबके फलस्वरूप स्त्री शिक्षा में दिन-प्रतिदिन सुधार आता गया। वर्त्तमान समय में प्राथमिक व माध्यमिक स्तर की शिक्षा के साथ-साथ उच्च स्तर की शिक्षा में भी बालिकाओं की स्थिति में काफी सुधार आया है। आज लडकियाँ, लड़कों के समान उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहीं हैं और अपनी योग्यता व क्षमता के बल पर राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहीं हैं। इस शोध लेख का उद्देश्य उच्च शिक्षा स्तर पर बालिकाओं की तात्कालिक स्थिति का वर्णन करना तथा इस स्तर पर बालिकाओं की शिक्षा की चुनौतियों जैसे महिला शिक्षिकाओं की कमी, संसाधनो की कमी आदि से लोगों को अवगत कराना तथा इन चुनौतियों के समाधान का सुझाव दिया गया है। इस लेख को चार भागों में विभाजित किया गया है- प्रथम, स्त्री शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि द्वितीय, उच्च शिक्षा स्तर पर लडकियों की वर्तमान स्थिति तृतीय, उच्च शिक्षा स्तर पर बालिका शिक्षा की चुनौतियाँ चतुर्थ ,उच्च शिक्षा स्तर पर बालिकाओं के सामने आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए सुझाव। इन चारों भागों का वर्णन करने के लिए विभिन्न लेख, सर्वे रिपोर्ट, शोध-पत्र, किताबों और अनेक प्रकार की ऑनलाइन सामग्री का प्रयोग किया गया है ।

मुख्य बिंदुः *स्त्री शिक्षा, उच्च शिक्षा, स्त्री शिक्षा की चुनौतियाँ*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति स्वयं को सभ्य बनाता है। यह जीवन जीने की कला सिखाती है, इसके द्वारा बच्चों के कौशल का व्यवस्थित ढंग से विकास किया जाता है। शिक्षा व्यक्ति को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाती है व्यक्ति को सत्य व असत्य में विभेद करना सिखाती है।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

वर्तमान युग समानता का युग है चाहे वह लड़के व लड़कियों की समानता हो, उंच-नीच की समानता हो या फिर आर्थिक रूप की समानता हो। वर्तमान समय में जाति, लिंग, धर्म आदि से ऊपर उठकर मानव को मानव के रूप में देखने की कोशिश की जा रही है। ऐसे समय में भी विशेषकर ग्रमीण क्षेत्र के लोग सोचतें हैं कि लडकियों की शिक्षा लडकों की अपेक्षा कम आवश्यक है, जबकि हम महसूस करते हैं की लड़कियों की शिक्षा बहुत जरुरी है, क्योंकि एक सुशिक्षित महिला परिवार, समाज व राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। नेपोलियन ने कहा था- "मुझे सुशिक्षित माताएं दो, मैं तुम्हें सुशिक्षित राष्ट्र दूंगा" (उपाध्याय, 2013)।

स्त्री शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

प्राचीन समय में स्त्रियों को पुरुषों के सामान अधिकार प्राप्त थें। उन्हें पुरुषों के समान पढ़ने का अधिकार था। वे भी समान रूप से शिक्षा ग्रहण करती थी। उस समय की दार्शनिक एवं विदुषी महिलाओं को 'ब्रम्हवादिनी' कहा जाता था। लगभग दो सौ ईसा पूर्व तक स्त्री शिक्षा की स्थिति अच्छी थी लेकिन धीरे-धीरे महिलाओं का महत्व कम होता गया और उन्हें शिक्षित करना अनावश्यक समझा जाने लगा। मुश्लिम काल में स्त्री शिक्षा और भी सीमित हो गई क्योंकि इस काल में महिलाओं के लिए पर्दा-प्रथा का प्रचलन हो चुका था फिर भी उच्च वर्ग व राज्य परिवारों की स्त्रियाँ व्यक्तिगत रूप से शिक्षा ग्रहण करती थी। ब्रिटिश काल में भी स्त्रियों की शिक्षा पर बहुत कम ध्यान दिया गया। जब 1854 ई. में वुड का घोषणा पत्र आया तो उसमें जन साधारण के लिए शिक्षा व्यवस्था करने की बात कही गई, जिसमें स्त्री शिक्षा भी शामिल हो जाती है। 1882 ई. में हंटर आयोग आया जिसने स्त्री शिक्षा के प्रोत्साहन के लिए अनेक सुझाव दिए, इस प्रकार स्त्री शिक्षा के प्रति थोडा झुकाव आया। राजाराम मोहन राय तथा महात्मा गाँधी हमेशा स्त्री-पुरुष समानता की बात करते थे। स्त्रियों को समाज में उचित स्थान दिलाने में इन महापुरुषों का महत्वपूर्ण स्थान है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् स्त्री शिक्षा के विकास के लिए एक राष्ट्रीय स्तर की समिति का निर्माण किया गया जिसका नाम था- नेशनल कमेटी फॉर विमेंस एजुकेशन (1959)। इस कमेटी ने कहा था कि¬¬ "इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि लड़कियों की शिक्षा की सामान्य तस्वीर सबसे असंतोषजनक थी और लड़कियों को व्यावहारिक रूप से कोई औपचारिक निर्देश नहीं मिला था सिवाय उस छोटे घरेलु निर्देश के जो उच्च वर्ग के परिवारों की लड़कियों में उपलब्ध था"। इस प्रकार स्वतंत्र भारत में सरकार द्वारा शिक्षा से सम्बंधित अनेक ऐसी समितियों तथा आयोगों का गठन किया गया जिसने स्त्री शिक्षा के संवर्धन में महत्वपूर्ण योगदान दिया ।

उच्च शिक्षा स्तर पर लड़कियों की वर्तमान स्थिति

जैसा कि हम जानते हैं कि स्वतंत्रता के बाद स्त्री शिक्षा के विकास के लिय अनेक सार्थक प्रयास किए गए। जिसके फलस्वरूप स्त्रियों की शिक्षा में काफी सुधार देखने को मिलता है। यदि जनगणना पर दृष्टि डाले तो वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार साक्षरता दर 52.19 प्रतिशत थी, जिसमें महिला साक्षरता 39.1 प्रतिशत थी तथा पुरुष साक्षरता दर 64.20 प्रतिशत थी। इसी प्रकार 2001 में भारत की साक्षरता दर 65.58 प्रतिशत थी, जबकि 2011 में 74.04 प्रतिशत हो गई। वर्ष 2001 में पुरुष साक्षरता दर 75.85 प्रतिशत थी जो 2011 में 82.14 प्रतिशत हो गई महिला साक्षरता दर वर्ष 2001 में 54.16 प्रतिशत थी जो 2011 में बढ़ कर 65.46 प्रतिशत हो गई(उपाध्याय, 2013; जनगणना, 2011)।

उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण रिपोर्ट (AISHE) के अनुसार वर्तमान समय में महिलाओं के सकल नामांकन अनुपात में वृद्धि दर्ज की गई है। एक वर्ष के अन्दर उच्च शिक्षा में महिलाओं के दाखिले में रिकार्ड लगभग 752097 लाख की बढ़ोतरी हुई है। वर्ष 2017-18 में जहाँ 17437703 महिलाओं ने उच्च शिक्षा में दाखिला लिया था वहीं इस वर्ष (2018-19) 18189800 छात्राओं ने प्रवेश लिया। इसके अलावा महिलाओं का सकल नामांकन अनुपात भी 25.4 से बढ़कर 26.4 फीसदी पर पहुँच गया है।

उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात

वर्ष	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19
कुल	24.5	25.2	25.8	26.3
पुरुष	25.4	26.0	26.3	26.3
महिला	23.5	24.5	25.4	26.4

स्रोत: *उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण रिपोर्ट (AISHE)*

उच्च शिक्षा स्तर पर स्त्री-शिक्षा की चुनौतियाँ व समस्याएं

उच्च शिक्षा स्तर पर स्त्री-शिक्षा की अनेक चुनौतियाँ हैं, जिसे दूर किए बिना स्त्री शिक्षा को आगे नहीं बढ़ाया जा सकता है। यूनिसेफ़ द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'चिल्ड्रेन एंड वीमेन इन इंडिया-1990' में स्त्री शिक्षा के संबंध में कहा गया है की "स्त्री शिक्षा को विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है"। इससे स्पष्ट है की स्त्री शिक्षा के विकास में सामजिक कुरीतियाँ व लोगों की रुढ़िवादी सोच एक मुख्य चुनौती है। वर्तमान समय में लोगों के सोच में परिवर्तन आया है लेकिन यह परिवर्तन ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्री शिक्षा के प्रति बहुत कम देखने को मिलता है। जिनके अभिभावक शिक्षित नहीं हैं वे आज भी रुढ़िवादी सोच रखते हैं और यही सोचतें हैं की

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

महिलाओं को थोड़ा-बहुत पढ़ा-लिखा कर उनकी शादी कर देनी चाहिए। उच्च शिक्षा स्तर पर महिला शिक्षिकाओं की कमी भी बालिका शिक्षा के विकास की बाधा है। उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण रिपोर्ट (AISHE, 2018-19) के अनुसार भारत में उच्च शिक्षा स्तर पर कुल 1416299 शिक्षक हैं जिसमें 57.8 प्रतिशत पुरुष शिक्षक तथा 42.2 प्रतिशत शिक्षिकायें हैं। गैर-शैक्षणिक महिला कर्मचारियों की कमी भी स्त्री शिक्षा में एक रुकावट पैदा करती है।

उच्च शिक्षा स्तर पर स्त्री शिक्षा की चुनौतियों के समाधान हेतु सुझाव

पिछले बिंदु में उच्च शिक्षा स्तर पर स्त्री शिक्षा की चुनौतियों का वर्णन किया गया है, उन चुनौतियों व समस्याओं का समाधान किस प्रकार किया जाए इसके लिए कुछ सुझाव दिए गये हैं। जैसे- शिक्षिकाओं की कमी को दूर करना, यदि हम स्त्री शिक्षा का विकास करना चाहतें है तो हमे महिला शिक्षिकाओं की कमी को दूर करना चाहिए क्योंकि शिक्षिकाओं से अंतरक्रिया करने में लड़कियां संकोच नहीं करती और अपने विचारों को निसंकोच उनके सामने अभिव्यक्त करती हैं। बालिकाओं व उनके अभिभावकों को उच्च शिक्षा स्तर पर सरकार द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों व योजनाओं की जानकारी प्रदान करना चाहिए। जिससे वे उन योजनाओं का लाभ उठाते हुए अपनी बालिकाओं को उच्च शिक्षा प्रदान कर सकें।

निष्कर्ष

निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में उच्च शिक्षा स्तर पर लडकियों के नामांकन में सुधार आया है। लोग लड़कियों को भी लड़कों के सामान उच्च शिक्षा देने का प्रयत्न कर रहे हैं। लेकिन इन्हें उच्च शिक्षा स्तर पर कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जैसे- विद्यालय में शिक्षिकाओं की कमी, गैर-शैक्षणिक महिला कर्मचारियों की कमी, सामाजिक समस्या व आर्थिक समस्या आदि। इन समस्याओं को दूर करके ही उच्च स्तर पर स्त्री शिक्षा का विकास किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

ए.आई.एस.एच.इ. (2015-16). उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण रिपोर्ट. एम.एच.आर.डी, भारत सरकार नई दिल्ली.

ए.आई.एस.एच.इ. (2016-17). उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण रिपोर्ट. एम.एच.आर.डी, भारत सरकार नई दिल्ली.

ए.आई.एस.एच.इ. (2017-18). उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण रिपोर्ट. एम.एच.आर.डी, भारत सरकार नई दिल्ली.

ए.आई.एस.एच.इ. (2018-19). उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण रिपोर्ट. एम.एच.आर.डी,भारत सरकार नई दिल्ली.

उपाध्याय, पी. (2013). भारतीय शिक्षा में उदीयमान प्रवृतियाँ. शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद.

http://www.censusindia.gov.in/1991-common/census_1991.html

http://www.censusindia.gov.in/2011-common/census_2011.html

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies